गृहस्थ में रहते मुक्ति का मर्म

• ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

एक बार एक महिला गोष्ठी में प्रश्न पूछा गया, क्या कारण है कि एक महिला घर-परिवार की सेवा संभाल में अपना सारा जीवन कुर्बान करने के बाद भी यही कहती हुई सुनी जाती है कि इतना सब करके मैंने क्या पाया? वह कहती है, मैंने परिवार की खुशी में अपनी हर इच्छा का दम घोट लिया फिर भी किसी की तरफ से अहसान या कृतज्ञता के दो बोल भी सुनने को नहीं मिले और दर्द की लहर तो तब उठती है जब बच्चे भी कह देते हैं, तुमने हमारे लिए किया ही क्या है? यह प्रश्न केवल महिलाओं का ही नहीं बल्कि जीवन की सांझ की ओर ढलते हर उस व्यक्ति का है जिसने अपनी जवानी फर्जअदाई में विलीन कर दी पर आज उसे उसकी मेहनत की कीमत कोई कर्म द्वारा तो क्या, शब्दों द्वारा भी देने को तैयार नहीं है। आइये, इस प्रश्न का उत्तर खोजें।

तपस्यालय या भोगालय

भारतीय संस्कृति में गृहस्थ को आश्रम माना गया है और फर्जअदाई को कर्मयोग। इन दोनों भावनाओं को लेकर किए गए कर्म, मनुष्य को जीवन के किसी भी पल में पश्चाताप का सामना करने नहीं देते। समस्या तब पैदा होती है जब गृहस्थ तपस्यालय के स्थान पर भोगालय बन जाता है और कर्त्तव्य, कर्मयोग के स्थान पर मोहपाश।

विधि में चूक रह गई

मानव के बचपन की नदी का जल स्वच्छता से भरपूर होता है परंतु जवानी की ओर बढ़ते-बढ़ते यह स्वच्छता दागी होनी शुरू हो जाती है। फिर प्यार किसी से कम, किसी से ज्यादा हो जाता है। अंदर कुछ, बाहर कुछ – ऐसा दोहरा व्यक्तित्व बन जाता है और जीवन कुछ गिनी-चुनी आत्माओं के स्वार्थों को पूरा करने में व्यस्त हो जाता है। यही व्यस्तता शारीरिक दुर्बलता को जन्म देती है। फिर संबंधों की तरफ से उपेक्षा मिलनी प्रारंभ हो जाती है। कमाई ऐसी की जो साथ चलने वाली नहीं है और संबंध ऐसे बनाए जो स्वार्थी निकले। अपनी तरफ से फर्ज़ अदायगी की पर थी वह कर्ज़ अदायगी। कर्ज़ उतारा कम, चढ़ा लिया ज़्यादा। भगवान को याद किया नहीं, किया भी तो स्वार्थ और दिखावेवश। अंत समय की ओर बढ़ते जब अपना खाता देखा तो खाली मिला। जो किया, वह जमा होने योग्य नहीं था। किया तो बहुत पर विधि में चूक रह गई। क्या चूक रह गई?

मोहपाश से बचें

हम सबने मक्खी देखी है। उसे मीठी वस्तु से बहुत प्यार होता है। यदि फर्श पर शहद (कोई भी मीठा तरल पदार्थ) बिखर जाए तो वह दौड़ी-दौड़ी आती है। मक्खी का पेट तो बहुत छोटा होता है, वह चाहे तो गिरे हुए शहद को एक किनारे से चूसकर, अपना पेट भरकर आराम से उड़ सकती है पर उससे एक ग़लती हो जाती है। वह मुख से खाना भूल, उस चिपचिपे पदार्थ पर हाथ-पाँव और संपूर्ण शरीर सहित टूट पड़ती है। उसके नन्हे हाथ-पाँव उसमें चिपक जाते हैं। शहद के अंबार पर बैठकर भी वह भूखी की भूखी रह जाती है। केवल मुँह लगाने से जो चीज़ आनन्द दे सकती थी, संपूर्ण शरीर को, मोहवश, डुबो लेने से वही जानलेवा बन जाती है। शहद में छटपटाते हुए मक्खी प्राण त्याग देती है। कारण है मक्खी का मोह।

मोह जहाँ होता है, वहाँ मनुष्य चीज़ का सुख नहीं लेता पर चीज़ों का संग्रह कर उनके मोहपाश में बँधकर तिलमिलाता हुआ प्राण त्याग देता है। क्या ही अच्छा हो, हम उस